Central Water and Power Research Station

Central Water and Power Research Station (CWPRS), Pune is an apex Research and Development institution in the field of hydraulics and allied research in the water and power sector, CWPRS was set up initially as a “Special Irrigation District” in 1916 by the then Bombay Presidency in recognition of the need for laboratory studies / investigations on hydraulic issues associated with irrigation, such as water logging and salt efflorescence, as well as with rivers and canals. It has continued to serve, for 100 years now, by catering to the research and development needs for evolving safe and economical planning and design of water resources structures, river engineering, hydropower generation, and coastal engineering projects fulfilling the mandate of 'Service to the Nation through Research'. Owing to its receptivity towards incorporating new technology with the changing times, the CWPRS's journey has continued ceaselessly over a century, earning it the stature of a world-class water and power research institution.

Research provides basic input for initiating a new dimension to the development. In fact, civilizations have grown with the pace of how well water resources were harnessed to meet the demands of water and power, which depends on the innovations and validations backed by the research. In this context, CWPRS is synonymous with the developments in the field of water and power in the country. Almost all important irrigation, hydropower, water supply, navigation and ports projects have imprints of this institution. For last hundred years CWPRS has been providing necessary back end support to various project authorities, viz., Central/ State Government Organizations, Public/ Private Sector Agencies/ Organizations/ Undertakings, Port Trusts, Municipal Corporations, etc. Success of all these projects can largely be attributed to sincere and dedicated research carried out in CWPRS.

CWPRS provides specialized services through physical / mathematical model studies and field / laboratory investigations in river training and flood control, hydraulic structures, ports and harbours, coastal protection, foundation engineering, construction materials, pumps and turbines, ship hydrodynamics, hydraulic design of bridges, environmental studies, earth sciences, thermal and nuclear power cooling water intakes, etc. Technical reports based on the results of the studies are submitted to the Project Authorities. A number of research papers are also published every year in various journals as also proceedings of conferences/ seminars/ symposia. Based on the experience gained from basic research and large number of studies, Technical Memoranda containing useful guidelines and material for designers and practicing engineers are published in the thrust areas such as 'River Training', 'Sediment Disposal', Geophysical Investigations', 'Seismic Surveillance of River Valley Projects', 'Strengthening of Hydraulic Structures' from time-to-time. Besides, CWPRS makes important contributions in reviewing/ updating and preparation of Indian Standards in specific areas of water resources development. CWPRS is associated with International Standards Organizations (ISO), particularly in the field of Sediment Transport. CWPRS is also represented on several technical committees related to river morphology, inland navigation, coastal erosion and protection, flood protection, earthquake resistant design, etc. Further, training is also imparted to the students, academicians, apprentices engineers and scientists from Central and State Government Organizations.

CWPRS has completed more than 5500 studies so far. At any given time, about 250 site-specific studies are in progress in various disciplines. The studies conducted by CWPRS are able to provide hydraulically sound and economically viable solutions to various problems associated with projects on water resources, power and water-borne transport including coastal and harbour engineering. Considering its highly competent scientific manpower and excellent infrastructure, CWPRS has been recognized as the Regional Laboratory of United Nations Economic and Social Commission for Asia and the Pacific (UNESCAP or ESCAP) since 1971.CWPRS has offered its services to a number of projects in the neighborhood countries viz., Bangladesh, Bhutan, Afghanistan, Myanmar, Nepal, Singapore, etc., as well as countries in Middle East and Africa.

Commensurate with the past achievements, CWPRS has a great vision to be a world-class centre of excellence in hydraulic engineering research and allied areas; which is responsive to changing global scenario, and need for sustaining and enhancing excellence in providing technological solutions for optimal and safe design of water resources structures. It continuously strives of upgrading its infrastructure and state of the art technologies to continue to serve the country through research.

In recognition of its service to the nation for 100 years, Department of Posts is happy to release a commemorative postage stamp on “Central Water and Power Research Station”.

Credits:-

Text	:	Based on the material received from proponent
Stamp/ FDC/ Cancellation cachet	:	Smt. Nenu Gupta

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA



केन्द्रीय जल एवं विद्युत अनुसंधान शाला
CENTRAL WATER AND POWER RESEARCH STATION

विवरणिका BROCHURE

केन्द्रीय जल एवं विद्युत अनुसंधान केंद्र

केन्द्रीय जल एवं विद्युत अनुसंधान केंद्र, पुणे जलगति विज्ञान एवं संबंधित अनुसंधान के क्षेत्र में, जल एवं विद्युत क्षेत्र के अनुसंधान एवं विकास की एक अग्रणी संस्था है। शुरूआती दौर में इसकी स्थापना तत्कालीन बाम्बे प्रेसीडेंसी द्वारा 1916 में "विशेष सिंचाई क्षेत्र" के रूप में की गई थी जिसका उद्देश्य सिंचाई से संबंधित जल विज्ञान की समस्याओं जैसे जल जमाव और लवण उत्फुल्लन के साथ नदियों एवं नहरों के लिए प्रयोगशाला अध्ययन / अंवेषण करना है। पिछले 100 वर्षों से लगातार यह अनुसंधान और विकास की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कार्यरत है। यह संस्था जल संसाधन संरचनाओं, नदी इंजीनियरिंग, जल विद्युत उत्पादन और समुद्रतटीय इंजीनियरिंग परियोजनाओं के लिए सुरक्षित एवं किफायती योजना तैयार करके अपने जनादेश "अनुसंधान के माध्यम से राष्ट्र सेवा" को परिपूर्ण करती है। बदलते समय के साथ नई प्रौद्योगिकी को शामिल करने की दिशा में अपनी ग्रहणशीलता के कारण, केन्द्रीय जल एवं विद्युत अनुसंधान केंद्र अपनी यात्रा एक सदी से भी अधिक समय तक जारी रखे हुए है, यह एक विश्व स्तरीय जल और विद्युत अनुसंधान की महान उपलब्धि है।

अनुसंधान, विकास को नई दिशा प्रदान करने के लिए बुनियादी सहयोग उपलब्ध करवाता है। वास्तव में, सभ्यताओं का विकास भी इसी आधार पर प्रगति करता आ रहा है कि किस प्रकार से जल संसाधनों को उपयोग में लाया जाए जिससे जल एवं विद्युत की आवश्यकता को पूरा किया जा सके, जोकि अनुसंधान द्वारा समर्थित नवाचारों और सत्यापन पर निर्भर करता है। इस संदर्भ में, केन्द्रीय जल एवं विद्युत अनुसंधान केंद्र देश में जल एवं विद्युत के क्षेत्र में विकास का पर्याय बन गया है। सिंचाई, जल विद्युत, जल आपूर्ति, नौपरिवहन और बंदरगाहों संबंधी लगभग सभी महत्वपूर्ण परियोजनाओं में इस संस्था की स्पष्ट झलक मिलती है। पिछले सौ सालों में केन्द्रीय जल एवं विद्युत अनुसंधान केंद्र द्वारा विभिन्न परियोजना अधिकारियों जैसे केन्द्रीय / राज्य सरकार के संगठनों, सार्वजनिक / निजी क्षेत्र की एजेंसियों / संगठनों / उपक्रमों, पोर्ट ट्रस्ट, नगर निगम आदि को आवश्यक समर्थन प्रदान किया गया है। इन सभी परियोजनाओं की सफलता का श्रेय काफी हद तक केन्द्रीय जल एवं विद्युत अनुसंधान केंद्र में किए गए यथार्थ और समर्पित अनुसंधान को दिया जा सकता है।

केन्द्रीय जल एवं विद्युत अनुसंधान केंद्र भौतिकीय / गणितीय प्रतिमान अध्ययनों और नदी प्रशिक्षण एवं बाढ़ नियंत्रण, जलीय संरचनाओं, पत्तनों एवं बंदरगाहों, तटीय सुरक्षा, नींव इंजीनियरिंग, निर्माण सामग्री, पंप और टर्बाइन, जहाज द्रवगतिविज्ञान, सेतुओं के जलीय डिजाइन, पर्यावरण अध्ययन, पृथ्वी विज्ञान, तापीय एवं परमाणु ऊर्जा प्रशीतलन अंतर्ग्रहण आदि के क्षेत्र / प्रयोगशाला अन्वेषणों के माध्यम से विशेष सेवाएं प्रदान करता है। अध्ययनों के परिणामों के आधार पर तकनीकी रिपोर्ट परियोजना अधिकारियों को प्रस्तुत की जाती है। विभिन्न पत्रिकाओं में अनेक शोध पत्र और सम्मेलनों / संगोष्ठियों / संगोष्ठियों की कार्यवाही भी हर वर्ष प्रकाशित की जाती है। बुनियादी शोध और बड़ी संख्या में किए गए अध्ययनों से प्राप्त अनुभव के आधार पर, अभिकल्पकारों और व्यावसायिक इंजीनियरों के लिए 'नदी प्रशिक्षण', 'तलछट निपटान', 'भूभौतिकीय जांच', 'नदी घाटी परियोजनाओं की भूकंप निगरानी', 'जलीयद्य संरचनाओं का सुदृढ़ीकरण' जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उपयोगी दिशा-निर्देशों एवं सामग्री युक्त तकनीकी ज्ञापन समय-समय पर प्रकाशित किए जाते हैं। इसके अलावा, जल संसाधनों के विकास के विशिष्ट क्षेत्रों में केन्द्रीय जल एवं विद्युत अनुसंधान केंद्र भारतीय मानकों की समीक्षा / उनकी अद्यतनीकरण और उन्हें तैयार करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है। केन्द्रीय जल एवं विद्युत अनुसंधान केंद्र, विशेष रूप से तलछट परिवहन के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय मानक संगठन (आईएसओ) के साथ जुड़ा हुआ है। केन्द्रीय जल एवं विद्युत अनुसंधान केंद्र ने नदी आकृति विज्ञान, अंतर्देशीय नौपरिवहन, तटीय कटाव एवं संरक्षण, बाढ़ सुरक्षा, भूकंपरोधी डिजाइन आदि से संबंधित कई तकनीकी समतियों का प्रतिनिधित्व किया है। इसके अलावा, केन्द्र और राज्य सरकारों के संगठनों के छात्रों, शिक्षाविदों, प्रशिक्षु इंजीनियरों और वैज्ञानिकों को भी यहां प्रशिक्षण दिया जाता है।

केन्द्रीय जल एवं विद्युत अनुसंधान केंद्र अब तक 5500 से अधिक अध्ययन पूर्ण कर चुका है। हर समय, विभिन्न विषयों पर लगभग 250 के आसपास स्थल विशिष्ट अध्ययन चल रहे होते हैं। केन्द्रीय जल एवं विद्युत अनुसंधान केंद्र में किए गए अध्ययन, जल संसाधन, ऊर्जा तथा तटीय एवं बंदरगाह इंजीनियरिंग से जनित जल परिवहन की विभिन्न परियोजनाओं से जुड़ी समस्याओं का जलीय विज्ञान आधारित सुदृढ़ एवं आर्थिक रूप से उपयुक्त समाधान प्रदान करते हैं। बेहद सक्षम वैज्ञानिक मानव शक्ति और उत्कृष्ट बुनियादी सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए, केन्द्रीय जल एवं विद्युत अनुसंधान केंद्र को 1971 के बाद से क्षेत्रीय और एशिया के लिए संयुक्त राष्ट्र आर्थिक एवं सामाजिक आयोग की क्षेत्रीय प्रयोगशाला (UNESCAP & ESCAP) के रूप में मान्यता प्रदान की गई है। केन्द्रीय जल एवं विद्युत अनुसंधान केंद्र बांग्लादेश, भूटान, अफगानिस्तान, म्यांमार, नेपाल, सिंगापुर आदि पड़ोसी देशों के साथ ही मध्य पूर्व और अफ्रीका के देशों की परियोजनाओं में अपनी सेवाएं प्रदान कर रहा है।

अतीत की उपलब्धियों के अनुरूप, केन्द्रीय जल एवं विद्युत अनुसंधान केंद्र के पास जलीय इंजीनियरिंग अनुसंधान एवं संबद्ध क्षेत्रों में उत्कृष्टता का एक विश्व स्तरीय केन्द्र बनने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण है; जो वैश्विक परिदृश्य को बदलने के लिए और जल संसाधन संरचनाओं के इष्टतम तथा सुरक्षित डिजाइन के लिए तकनीकी समाधान उपलब्ध कराने में उत्कृष्टता बनाए रखने तथा उसमें अभिवृद्धि की आवश्यकता के लिए उत्तरदायी है। अनुसंधान के माध्यम से देश की सेवा करने के लिए यह अपने बुनियादी ढांचे और अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी का उन्नयन करने के लिए लगातार प्रयत्नशील रहता है।

डाक विभाग 100 वर्षों से देश की सेवा में समर्पित ''केन्द्रीय जल एवं विद्युत अनुसंधान केंद्र'' के सम्मान में डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:-

मूलपाठ	:	प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित
डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/ विरूपण	:	श्रीमती नीनू गुप्ता

भारतीय डाक
India Post

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग Denomination	: :	500 पैसा 500 p
मुद्रित डाक-टिकटें Stamps printed	: :	410400 410400
मुद्रण प्रक्रिया Printing Process	: :	वेट ऑफसेट Wet Offset
मुद्रक Printer	: :	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद Security Printing Press, Hyderabad

The above philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00